एक जीवन एक रिपोर्ट

एक अनाम लड़की, एक अनाम संघर्ष, एक अनाम मौत

अविनाश

नये पुराने बिहार के दरभंगा ज़िले में एक पूनम मल्लिक हुआ करती थी। बात क़रीब पंद्रह सोलह साल पुरानी है। छोटे शहरों की लड़कियां अपनी अनंत इच्छाओं के साथ वही जीवन जीती हैं, जिसकी उन्हें इजाज़त दी जाती है। लेकिन पूनम मल्लिक ने अपना रास्ता खुद बनाया।

उसके घर में टेलीविज़न नहीं था। वह जिस कॉलेज में पढ़ती थी, वहां लड़कियां अपने अरमान भले शेयर करें, लेकिन उन अरमानों के दायरे में एक पारंपरिक शर्म भी मौजूद होती थी। ऐसे में अभिनेत्री बनने का ख़याल पूनम के मन में कब आया होगा, कहना मुश्किल है, लेकिन उसने छोटे शहर के उ खड़ती सांसों वाले रंगमंच में हलचल मचा दिया।

पूनम मल्लिक एक ग़रीब कायस्थ परिवार से आती थी। इस परिवार ने हालातों की वजह से ग़रीबी देखी थी। पिता सरकारी नौकर रहे थे, लेकिन किन्हीं वजहों से हुई बर्खास्तगी ने उन्हें दरभंगा शहर में दो तीन सौ रुपये के किराये के घर में पूरे परिवार के साथ रहने पर मजबूर कर दिया था। पूनम से बड़ी बहन सलज्ज थीं और घर की दहलीज के भीतर ही उनका ज्यादा समय बीतता था। बड़ा भाई भी कुछ करने लायक नहीं था... और जैसा कि आम तौर पर सामंती संस्कारों वाले घर में होता है, वह प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के नाम पर अपनी अकर्मण्यता को चमकते भविष्य की कुंजी बताते हुए लंबे समय तक परिवार को एक फरेब दिखाता रहा। एक पूनम ही थी, जिसके पास अपना सपना था, अपनी कर्मठता थी। वह ट्यूशन पढ़ाती थी और उसी के पैसे से घर भी चलता था।

जिसने कभी कोई घर चलाया हो, वही जान सकता है कि उसकी जद्दोज़हद क्या होती है। इस जद्दोज़हद के बीच भी पूनम मल्लिक नाटक के लिए वक्त निकाल लेती थीं। दरभंगा राज के किले की सरहद के भीतर ही एक कमरा इप्टा को मिला हुआ था। वहां ठीक चार बजे पूनम मल्लिक पहुंच जाती थी। बाद में दूसरे रंगकर्मी पहुंचते और हमेशा इस बात पर हैरान रहा करते थे कि कोई चाह कर भी वक्त पर नहीं पहुंच पाता और पूनम मल्लिक वक्त का इतना ख़याल कैसे रख पाती है। यह उनका वो पेशेवर अंदाज़ था, जो साबित करता था कि वो अपने अरमानों को लेकर कितनी सचेत हैं। दरभंगा में कई नाट्य संस्थाओं के साथ पूनम मल्लिक ने एक दर्जन से अधिक पूर्णकालिक नाटक किये। उनमें भिखारी ठाकुर का गबरघिचोर, मिथिला की एक मिथ कथा पर आधारित जट जटिन और मोहन राकेश का आषाढ़ का एक दिन के अलावा बड़ा नटकिया कौन, नागमंडल और सैयां भये कोतवाल को लोग आज भी याद करते हैं। पूनम मल्लिक दरभंगा आकाशवाणी में आकस्मिक उद्घोषिका का काम भी कभी कभार करती थी, लेकिन वह महज जीवनयापन के लिए एक ज़रूरी काम की तरह ही था।

1994 में पटना में इप्टा का स्वर्ण जयंती समारोह हुआ। उस वक्त पूनम की उम्र 23 साल थी। दरभंगा से भी इप्टा का एक छोटा सा जत्था गया था, जिसमें वो और उसकी मौसेरी बहन प्रतिमा राज गयी थी। प्रतिमा उसी की प्रेरणा से थिएटर में आयी थी और दोनों का साथ 'एक तरह की ज़िंदगी एक तरह के अरमान' का साथ हो गया था। पटना के उस समारोह में ही पूनम मल्लिक की मुलाक़ात मसूरी के जत्थे के साथ आये दीपक कुमार से हुई। दोनों ने एक दूसरे में काफी रुचि दिखायी और बाद में दरभंगा लौटने के बाद भी ख़तो किताबत का सिलसिला जारी रहा।

तीन साल बीत गये। तीन साल में ये संपर्क एक दूसरे का होने के जुनून में बदल गया। इस बीच दरभंगा में लगातार नाटक करते हुए एक ख़ास किस्म की यथास्थिति से ऊब भी हो गयी थी। पूनम और प्रतिमा ने मुंबई की राह पकड़ने की सोची। ये सोचना आसान था, मुंबई की रेल में बैठना लगभग असंभव। लेकिन अपनी ज़िद और जिजीविषा की ताक़त के साथ पूनम और प्रतिमा एक दिन मुंबई चली गयीं, शहर को दूसरे दिन पता चला। फिर कोई समझ सकता है कि कितना भूचाल आया होगा। कितनी तरह की चर्चा कुचर्चाओं ने दोनों लड़कियों का पीछा किया होगा।

ज़ाहिर है मुंबई सबको सबके तरीक़े से पनाह नहीं देती, अपने तरीक़े से ही रहने देती है। थोड़े दिनों बाद दोनों ने अभिनेत्री बनने का इरादा छोड़ दिया और जीने के लिए दूसरे ज़रियों की तलाश शुरू कर दी। पूनम मल्लिक सुरभि नाम के मशहूर टीवी सीरियल के प्रोडक्शन से जुड़ गयी। प्रतिमा किसी प्राइवेट एफएम में कैजुअल अनाउंसर का काम करने लगी। वहीं पूनम मल्लिक ने मसूरी से दीपक को बुलाया और एक मंदिर में उससे शादी कर ली। साक्षी थी प्रतिमा, जिसने मुंबई में ही दरभंगा के एक रंगकर्मी दोस्त को अपना हमसफ़र बना लिया था।

पूनम मल्लिक की ज़िंदगी में शादी एक हादसा साबित हुई। अभी तक संजोये ख्वाब में एक ख़ौफनाक सेंध की तरह जीवन शुरू हुआ। जैसा कि प्रतिमा बताती है, दीपक हर रोज़ का शराबी निकला और जिस दिन पूनम को वेतन मिलता, उस दिन दोनों में खूब मारपीट होती। पूनम ने नर्क बनी इस घरेलू ज़िंदगी को लेकर कभी किसी के सामने आंसू नहीं बहाये। भारतीय स्त्री के पास परंपरा से मौजूद एक मर्यादित मन और आचरण की फकीर बन कर पूनम मल्लिक ने कई बार अपने पति को समझाया, लेकिन हर बार वो ज़्यादा हिंसक हो जाता था। एक दिन पूनम को उसके हाल पर छोड़ कर वह मसूरी लौट गया। उस वक्त तक पूनम गर्भवती हो चली थी।

पूनम मल्लिक मुंबई से सटे ठाणे के भायंदर की किसी बेहद तंग सोसाइटी में एक कमरा लेकर रहती थी। यहीं वो बुरी तरह डिप्रस्ड रहने लगी और हमेशा थकी थकी लगती। प्रतिमा बताती है कि पेट उभर आया था और पूनम अब थोड़ा आराम चाहती थी। लॉज के हालात भी उसके पक्ष में नहीं थे। लोग पूनम को बार गर्ल समझने लगे और एक दिन इसी बात पर हंगामा भी हो गया। मसूरी से दीपक को बुलाया गया। काफी नानुकूर के बाद दीपक आया और पूनम को लेकर मसूरी चला गया। ये बात 2001 के दिसंबर की है। मसूरी में ही 2002 में उसने एक बच्चे को जन्म दिया।

उसके बाद की कहानी किसी को नहीं मालूम। चार साल कैसे और किस हालात में बीते, यह पूनम को जानने वाले लोग इसलिए भी नहीं जानते, क्योंकि उसने लोगों से खुद को पूरी तरह काट लिया

था। अचानक एक दिन पूनम की मौत की ख़बर आयी। वो भी मौत के हफ्ते भर बाद दिल्ली के रिश्तेदारों ने प्रतिमा को इसकी ख़बर दी। 12 अक्टूबर 2006 को पूनम की मौत हुई। पूनम की बुरी ज़िंदगी का जितना भी लोगों को अंदेशा हो, लेकिन उसकी मौत का अंदेशा शायद ही किसी को था। प्रतिमा मसूरी गयी। पता चला, घर की मुंडेर से गिर कर पूनम मल्लिक मरी। लोगों ने बताया कि पूनम कई दिनों से परेशान रहती थी और उसने खुद मुंडेर से छलांग लगायी। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में मौत की वजह सर फटना बताया गया था। उसकी मौत खुदकुशी ज़ाहिर होने के बाद भी मसूरी की पुलिस ने कोई एफआईआर दर्ज नहीं की। पूनम के भाई को बुला कर उससे लिखवा लिया गया कि वे लोग इस हादसे की किसी भी किस्म की कोई पड़ताल नहीं चाहते। पूनम की मौत के बाद ये उस परिवार का बयान था, जिसके लिए उसने अपनी ज़िंदगी का सबसे अहम वक्त कुर्बान किया था। जबकि उसकी खुदकुशी, उसकी हत्या, उसकी स्वाभाविक या हादसाजन्य मौत के बीच में से अंतिम तथ्य खोजा जाना अभी बाक़ी है।

लेकिन उस शहर को भी कोई फर्क नहीं पड़ा, जहां उसने रंगकर्म की क्यारी सजायी थी? जिसने भी सुना, ज्यादातर ने कहा, उसका हश्र यही होना था। क्योंकि उसने शहर से भागने का दुस्साहस किया था। घर शहर से भागकर कोई लड़की परिवार और शहर दोनों को ही बदनाम करती है। पूनम ने भी ऐसा ही किया, इसलिए पुरानी लीक पर चल रहे शहर को उसका कृतज्ञ होना भी नहीं था। लेकिन वे लोग, जो स्त्री के संघर्ष और उसकी स्वायत्तता में भरोसा करते हैं, उन्होंने भी पूनम की मौत को उतनी गंभीरता से नहीं लिया। एक तात्कालिक आह के बाद वे सबके सब अपनी अपनी ज़िंदगी जीने लगे। पूनम मल्लिक को उसके शहर ने भुला दिया था। अभी भी वहां लोग नाटक करते हैं, लेकिन शायद किसी ने पूनम के लिए दो मिनट का मौन नहीं रखा।

अब सवाल है कि अपने अपने शहरों से निकल कर कितनी कितनी पूनम मल्लिक अरमानों के अपने अपने शहर में एक एक कमरा लेकर रह रही होंगी। हम उन सबकी मौत का इंतज़ार कर रहे हैं। क्या हम उनकी ज़िंदगी के लिए कुछ कर सकते हैं? एक ही रास्ता है। इस बात के लिए मसूरी पुलिस से प्रार्थना करें कि वो पूनम मल्लिक की मौत कैसे हुई, इसकी जांच के लिए पहले एफआईआर दर्ज करें। फिर उस दीपक को गिरफ्तार करें, जिसने मोहब्बत का फरेब रच कर एक लड़की को पहले उसके अरमानों और फिर उसकी ज़िंदगी से महरूम कर दिया। देश के लिए एक अनाम सी लड़की की अनाम मौत को इंसाफ की रोशनी में देखने की कोशिश ही अरमानों वाली देश की दूसरी लड़कियों के लिए राह बनाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

प्रतिमा राज, मुंबई : 09969171713
अविनाश, आउटपुट एडिटर, एनडीटीवी इंडिया : 09811908884